अर्थशास्त्र – II पत्र — अर्थशास्त्र

6, 4, एवं 2 उपयोगिता प्राप्त होती है। पाँचवीं रोटी खाने के बाद उपभोक्ता की भूख शांत हो जाती है ऐसी परिस्थिति में छठी रोटी के प्रति उदासीन रहेगा और उसे शून्य उपयोगिता का अनुभव होता है। इसका अर्थ यह हुआ कि वह पूर्ण संतुष्टि की स्थिति में पहुँच गया है। इसके बाद भी वह सातवीं रोटी खाने का क्रम जारी रखेगा तो उसे ऋणात्मक उपयोगिता (Negative utility) का अनुभव होगा। निम्न तालिका से यह और अधिक स्पष्ट हो जायेगा :

रोटी की इकाई	उपभोक्ता से प्राप्त उपयोगिता
1	10
2	8
3	6
4	4
5	2
6	0
7	—(Negative)

सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम को एक रेखाचित्र के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है:— निम्न चित्र में OX रेखा पर रोटी की इकाई, जबकि OY रेखा पर उससे प्राप्त उपयोगिता को दिखाया गया है। इस चित्र से यह स्पष्ट है कि पहली रोटी से 10 उपयोगिता, दूसरी से 8, तीसरी से 6 उपयोगिता, चौथी से 4, पाँचवीं से 2, छठी से शून्य तथा 7 से ऋणात्मक उपयोगिता प्राप्त होती है। अधिक रोटी खाने पर उपभोक्ता को अनुपयोगिता मिलती है। AB सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम की रेखा है। इस चित्र से यह स्पष्ट है कि जैसे-जैसे उपभोक्ता रोटी की अधिकाधिक इकाईयों का उपभोग करते चला जाता है वैसे-वैसे रोटी से प्राप्त सीमांत उपयोगिता घटती चली जाती है।

सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम के लागू होने की कुछ आवश्यक मान्यताएँ हैं:— (1) अन्य बातें के समान रहने पर ही यह नियम कार्य करता है। उपभोग की जाने वाली वस्तु की सभी इकाइयों के गुण एवं मात्रा समान होना चाहिए। (2) वस्तु की इकाइयाँ उपयुक्त होनी चाहिए। (3) उपभोग की क्रिया लगातार होनी चाहिए। (4) उपभोग की अवधि लम्बी होने पर उपभोक्ता की आदत, स्वभाव तथा फैशन में परिवर्तन नहीं होना चाहिए। (5) उपभोग के क्रम में उपभोक्ता के मानसिक स्थिति में किसी भी तरह का परिवर्तन नहीं होना चाहिए। सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम के कुछ अपवाद भी हैं:— (1) अच्छी कविता, अथवा अच्छा गाना सुनने के संबंध में यह नियम काम नहीं करता है। (2) मदिरापान या शराब पीनेवाले व्यक्ति को शराब के हर नये प्याले से अधिक उपयोगिता प्राप्त होती है यहाँ यह नियम कार्य नहीं करता है। इसलिए इसे इस नियम का अपवाद कहा जाता है। (3) विचित्र एवं दुर्लभ वस्तुओं के संग्रह के साथ भी यह नियम कार्य नहीं करता है। (4) खास-खास वस्तुओं के उपभोक्ताओं की संख्या में वृद्धि होने से उनकी उपयोगिता घटने के बजाय, उनकी उपयोगिता बढ़ती जाती है अतः यह इस नियम के अपवाद हुए। उपरोक्त अपवादों के बावजूद भी सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम व्यावहारिक दृष्टि से बड़ा ही महत्वपूर्ण है। — ×

R.L.S. college Sukhdeng Brajesh Pathak
9/9/20

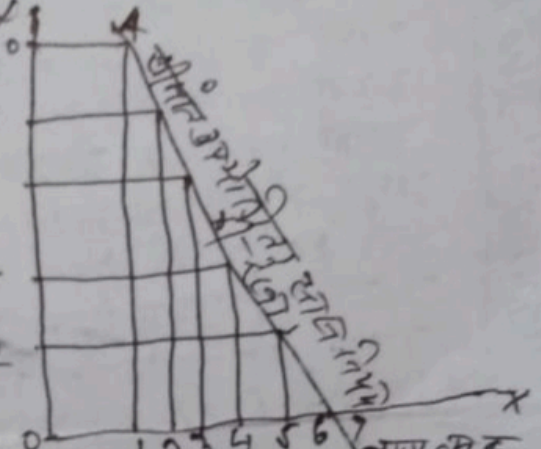

Bhawani
9/9/20.

शास्त्री - IInd.

Date

'मुद्रा का महत्व'
(Importance of Money)

मुद्रा एक ऐसी वस्तु है, जो विनिमय के माध्यम, मूल्य के मापक, स्थगित भुगतान के मान तथा मूल्यों के संचय के साधन के रूप में विस्तृत तथा सामान्य रूप से स्वतंत्र (स्वीकार (Accept) की जाती है। (So money is a matter of function four a medium a measure a standard and store.) मुद्रा के महत्व के बारे में Prof Marshall का कहना है कि - "मुद्रा वह धुरी है, जिसके चारों ओर सम्पूर्ण अर्थशास्त्र चक्कर लगाता है।" (Money is the pivot around which the whole economic science clusters.) वास्तव में आज मानव का प्रत्येक कार्य मुद्रा पर ही आधारित हो गई बड़े-बड़े उद्योग, किसान उत्पादन, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तथा प्रत्येक प्रकार का लेन-देन मुद्रा के द्वारा ही सम्पन्न होता है। मुद्रा के महत्व के संबंध में दो मत है पहला मत यह है मुद्रा एक महत्वहीन वस्तु है। दूसरा मुद्रा एक अति महत्वपूर्ण वस्तु है। पहले मत के अनुसार (J.S. Mill) - "आधुनिक अर्थव्यवस्था में मुद्रा से अधिक महत्व की कोई वस्तु नहीं है। यह केवल श्रम तथा समय की बचत में सहायता करती है। वास्तव में प्रसिद्ध अर्थशास्त्रियों ने मुद्रा को कम महत्वपूर्ण और अनुत्पादक समझा। एडम स्मिथ ने यहाँ तक कहा था कि मुद्रा उस सड़क के समान है जिस पर घास का तिनका भी उत्पन्न नहीं होता है। इसके विपरीत ठीक इसके विपरीत ही Crowther तथा मार्शल मुद्रा को अत्यधिक महत्वपूर्ण मानते हैं, क्योंकि मुद्रा आधुनिक उद्योग तंत्र की धमनियों में रक्त की स्थान ग्रहण करती है। Crowther के शब्दों में "जो महत्व यन्त्रशास्त्र में पहिये का, विज्ञान में अग्नि, तथा राजनीति में मताधिकार का है, वही स्थान मनुष्य के आर्थिक जीवन में मुद्रा के आविष्कार का है।" आधुनिक युग में मनुष्य की सभी आर्थिक क्रियाएं मुद्रा के बिना संभव नहीं है, मुद्रा ही जो प्रशंसा की पात्र वह कम ही रहा। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मुद्रा प्रभावित होती है। इसीलिए तो मुद्रा को "मानव क्षमता की धुरी कहते हैं।" इसके ठीक विपरीत - "मुद्रा जो मनुष्य मात्र के लिए अनेक लाभों का स्रोत है, अनियंत्रित होने पर संकट एवं अस्तव्यस्तता का कारण बन जाती है।"

R.U.S. College Surubera

Bhawani
9/9/20.

उपशास्त्री - Dhairya Bhawnani
बालाजी

सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम

सर्वप्रथम इस नियम की व्याख्या जर्मनी के अर्थशास्त्री हेनरी गोसेन (Gossen) ने किया था। इनके अनुसार "जैसे-जैसे हम किसी एक ही संतोष की अधिकाधिक मात्रा को प्राप्त करते जाते हैं, वैसे-वैसे वह घटता जाता है और अन्त में पूर्ण संतुष्टि की सीमा तक पहुँच जाता है। (The amount of one and the same satisfaction declines as we proceed with that satisfaction until satiety is reached - Gossen) अतएव इस नियम को हम गोसेन का प्रथम नियम भी कहते हैं।

इस नियम के अनुसार - "जैसे-जैसे हम किसी वस्तु की अधिकाधिक मात्रा का उपभोग करते हैं, वैसे-वैसे उसकी अगली इकाई से प्राप्त उपयोगिता घटती जाती है। यह सामान्य अनुभव की बात है कि किसी भी वस्तु की पहली इकाई की अपेक्षा दूसरी से कम, दूसरी की अपेक्षा तीसरी से कम, तथा तीसरी की अपेक्षा चौथी इकाई से कम उपयोगिता प्राप्त होती है। दूसरे शब्दों में, किसी वस्तु की उत्तरोत्तर इकाई के उपभोग से हमें क्रमशः घटती हुई उपयोगिता प्राप्त होती है। सीमान्त उपयोगिता के इस क्रमशः घटने की प्रवृत्ति को अर्थशास्त्र में सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम (Law of diminishing Marginal Utility) कहते हैं।

प्रो० मार्शल ने इस नियम की परिभाषा इस प्रकार दी है - "किसी व्यक्ति के पास किसी वस्तु की जो मात्रा होती है, उसमें वृद्धि होने से उसे जो अतिरिक्त लाभ प्राप्त होता है वह उस वस्तु की मात्रा में वृद्धि के साथ साथ घटते जाता है।" (The additional benefit which a person derives from a given increase of his stock of a thing diminishes with the growth of the stock that he already has.)

दूसरे शब्दों में "यदि अन्य बातें पूर्ववत रहें तो जैसे-जैसे किसी वस्तु की मात्रा हमारे पास बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे उसकी अगली इकाई से प्राप्त उपयोगिता घटती जाती है। एक उदाहरण द्वारा सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम की व्याख्या की जा सकती है -

उदाहरणस्वरूप कोई व्यक्ति भूखा है उस व्यक्ति को पहली रोटी से अधिक उपयोगिता का अनुभव होता है मान लिया जाए कि पहली रोटी से उपयोगिता की 10 उपयोगिता का अनुभव होता है पहली रोटी खाने के बाद उसकी भूख शान्त हो जाती है, अतः दूसरी रोटी के लिए उसकी तीव्रता कम हो जाती है मान लिया कि दूसरी रोटी से पहले की अपेक्षा कम, आठ 8 उपयोगिता का अनुभव होता है, इसी प्रकार उसे तीसरी, चौथी एवं पाँचवी रोटी से क्रमशः

P. T. O